अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

तेरापंथ धर्मसंघ के महाकुम्भ 155वें मर्यादा महोत्सव का मंगल आगाज

-दक्षिण भारत के 'मैनचेस्टर' कोयम्बत्तूर के लिए अद्वितीय, अविस्मरणिय पल रहा महोत्सव का प्रथम दिन

-मंगलमहमंत्रोच्चार के साथ महातपस्वी महाश्रमणजी ने मर्यादा पत्र को किया स्थापित

-प्रथम दिन सेवा के रहा नाम, विभिन्न सेवाकेन्द्रों के लिए सेवार्थियों की आचार्यश्री द्वारा हुई घोषणा

-मुख्यनियोजिकाजी ने सेवा के महत्त्व को किया व्याख्यायित

-साधु-साध्वियों ने आचार्यश्री के समक्ष सेवा देने के लिए की प्रार्थना

10.02.2019 पीलामेडु, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु): दक्षिण भारत के 'मैनचेस्टर', अद्यौगिक नगरी कोयम्बत्तूर में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के महाकुम्भ 155वें मर्यादा महोत्सव का कोडेशिया ट्रेड फेयर के ब्लाक डी में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता, आध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि और उनकी ही मंगलवाणी से उच्चरित मंगल महामंत्रोच्चार के साथ आरम्भ हुआ तो वह क्षण कोयम्बत्तूरवासियों के लिए अविस्मरणिय, अद्वितीय और अकल्पनीय बन गया। उनकी वर्षों की अर्जी, उनकी अनेकों दिनों की मेहनत और उनकी अपने आराध्य के प्रति संपूर्ण निष्ठा का मानों आज प्रतिफल प्राप्त हो गया।

रविवार को दोपहर लगभग बारह बजे आचार्यश्री ने गीतान्जलि मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल से लगभग चार सौ मीटर दूर स्थित कोडेशिया ट्रेड फेयर के ब्लाक डी के लिए प्रस्थान किया। आज तो मानों आसमान का सूर्य भी अध्यात्म जगत के महासूर्य की चमक को देखने को लालायित नजर आ रहा था। आसमान का सूर्य भी मानों अपनी संपूर्ण कलाओं के साथ दर्शन को उपस्थित था तो आज आचार्यश्री भी अपने अनेकानेक श्वेत रश्मियों के साथ एक नवल इतिहास की रचना को कदम बढ़ा रहे थे। दक्षिण भारत की धरा पर तेरापंथ धर्मसंघ के महाकुम्भ 'मर्यादा महोत्सव' के 155वें आयोजन हेतु आचार्यश्री के कदम गतिमान हो रहे थे। भव्य रूप में तैयार किया गया मर्यादा समवसरण आचार्यश्री के आगमन से पूर्व ही पूरी तरह जनाकीर्ण बन गया था। आचार्यश्री के पदार्पण मार्ग से लेकर प्रवचन स्थल तक श्रद्धानत शीष और आस्था के साथ करबद्ध लोगों को अपने आशीष से आच्छादित करते हुए आचार्यश्री मर्यादा समवसरण में पधारे। आचार्यश्री के पधारते ही पूरा पंडाल जयकारों से गुंजायमान हो उठा। मंच पर महासूर्य की भांति की भांति उदित हुए आचार्यश्री की एक ओर साध्वीवृंद तो दूसरी ओर संत समाज विद्यमान थे। यह दृश्य देख मानों संपूर्ण कोयम्बत्तूर का जन-जन मन हर्षित था।

आचार्यश्री ने मंगल महामंत्रोच्चार के उपरान्त तेरापंथ धर्मसंघ के मर्यादा पत्र को स्थापित कर 155वें मर्यादा महोत्सव के शुभारम्भ की घोषणा की। आचार्यश्री की इस घोषणा के साथ ही कोयम्बत्तूर की धरती पर तेरापंथ धर्मसंघ के महाकुम्भ का मंगल आगाज हो गया। मुनिदिनेशकुमारजी ने मर्यादा गीत का संगान किया। इस महोत्सव का प्रथम दिवस मुख्यतः सेवा के लिए निर्धारित होता है। इस क्रम में मुख्यनियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी ने सेवा के महत्त्व को व्याख्यायित किया। साध्वीवृंद की ओर से शासन गौरव साध्वीश्री कल्पलताजी ने आचार्यश्री से सेवा की प्रार्थना की। मुनिवृंद की ओर से मुनि कुमारश्रमणजी ने आचार्यश्री से सेवा के लिए सेवा की प्रार्थना की।

इसके पश्चात महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिन अपनी प्रथम देषणा प्रदान करते हुए कहा कि गुरु गुणों के सागर होते हैं। उनमें गुणरत्न निहित होते हैं। वे जो बात बताएं जो मार्ग सुझाएं, उसे सुनकर अपने जीवन में उत्थान करना चाहिए। आचार्यश्री ने आचार्य भिक्षु को याद किया और उनकी संघ की स्थापना और उसके लिए बनाए गए मर्यादा व्यवस्था को वर्णन किया और सेवा के महत्त्व को बताते हुए विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर सेवादायी साधु-साध्वियों के नामों की घोषणा की। विकास परिषद के सदस्य श्री पदमचंद पटावरी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय महिला मण्डल और तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों से समूह स्वर गीत का संगान किया। आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री विनोद लुणिया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।